2 महाकवि माघ का प्रभात – वर्णन

- आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी

1. निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर लिखिए–

(क) अंधकार के विकट वैरी महाराज अंशुमाली अभी तक दिखायी भी नहीं दिये। तथापि उसके सारथि अरुण ही ने, उनके अवतीर्ण होने के पहले ही, थोड़े ही नहीं, समस्त तिमिर का समूल नाश कर दिया। बात यह है कि जो प्रतापी पुरुष अपने तेज से अपने शत्रुओं का पराभव करने की शक्ति रखते हैं, उनके अग्रगामी सेवक भी कम पराक्रमी नहीं होते। स्वामी को श्रम न देकर वे खुद ही उनके विपक्षियों को उच्छेद कर डालते हैं। इस तरह, अरुण

के द्वारा अखिल अन्धकार का तिरोभाव होते ही बेचारी रात पर आफत आ गयी। इस दशा में वह कैसे ठहर सकती थी। निरुपाय होकर वह भाग चली।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक के नाम लिखिए।

उत्तर- (i) सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन' पाठ शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी' हैं।

अथवा **पाठ का नाम- 'महाकवि माघ का प्रभात - वर्णन'।**

लेखक का नाम- 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी'।

प्रश्न- (ii) प्रस्तुत गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- लेखक महावीरप्रसाद द्विवेदी जी कल्पना करते हैं कि सूर्यदेव के उदित होने से पूर्व उनका सारथि अरुण उपस्थित हो गया है और उसने जगत् के सम्पूर्ण अन्धकार को समाप्त कर दिया है। अपनी बात का समर्थन करते हुए लेखक ने स्पष्ट किया है कि शक्तिशाली, तेजस्वी और वीर पुरुषों में उनका प्रभाव देखने को मिलता है। अनेक बार वे अपने स्वामियों को कष्ट न देकर, उनके बहुत से काम स्वयं ही कर देते हैं। उनके विरोधियों को भी वे स्वयं ही समाप्त कर डालते हैं। इसी प्रकार सूर्य के आगमन से पूर्व उनके सारथि अरुण ने सम्पूर्ण अन्धकार को पराजित कर दिया है।

प्रश्न- (iii) भगवान सूर्यदेव का सारथि कौन है ?

उत्तर- 'भगवान सूर्यदेव का सारथि अरुण है।

प्रश्न- (iv) अंधकार का शत्रु किसे बताया गया है?

उत्तर- अंधकार का शत्रु महाराज अंशुमाली (भगवान सूर्यदेव) को बताया है।

प्रश्न- (v) अंधकार का समूल नाश किसने कर दिया ?

उत्तर- (v) अन्धकार का समूल नाश अरुण ने कर दिया।

(ख) सूर्यदेव की उदारता और न्यायशीलता तारीफ के लायक है। तरफदारी तो उसे छू तक नहीं गयी पक्षपात की तो गंध तक उसमें नहीं, देखिए न, उदय तो उसका उदयाचल पर हुआ, पर क्षण ही भर में उसने अपने नये किरण-कलाप को उसी पर्वत के शिखर पर नहीं, प्रत्युत् सभी पर्वतों के शिखरों पर फैलाकर उन सबकी शोभा बढ़ा दी। उसकी इस उदारता के कारण इस समय ऐसा मालूम हो रहा है, जैसे सभी भूवरों ने अपने शिखरों - अपने मस्तकों पर दुपहरिया के लाल-लाल फूलों के मुकुट धारण कर लिए हों।

सच है, उदारशील सज्जन अपने चारुचरितों से अपने ही उदय देश को नहीं, अन्य देशों को भी आप्यायित करते हैं।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन' पाठ शीर्षक से उद्धृत है है। इसके लेखक 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ' हैं।

अथवा - पाठ का नाम 'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन' ।

लेखक का नाम- 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी' ।

प्रश्न- (ii) प्रस्तुत गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- सूर्यदेव उदार स्वभाव वाले और न्यायप्रिय हैं। वे सभी के लिए समान रूप से हितकारी हैं। किसी के साथ भी पक्षपात

करने अथवा अपने-पराए की भावना उनमें नहीं है। यदि वे पक्षपात करने की भावना से युक्त होते तो अपनी स्वर्णिम किरणों से केवल उसी भूमि अथवा पूर्व दिशा के पर्वत शिखरों को आलोकित करते, जहाँ उनका उदय होता है, परन्तु वे तो सभी के प्रति समानता का भाव रखते हैं तथा सभी पर्वतों और सभी दिशाओं को अपने स्वर्णिम आलोक से शोभायमान करते हैं।

प्रश्न- (iii) सूर्यदेव के स्वभाव के विषय में लेखक के क्या विचार हैं?

उत्तर- सूर्यदेव के स्वभाव के विषय में लेखक का विचार है कि सूर्यदेव उदार, न्यायप्रिय एवं पक्षपातरहित हैं।

प्रश्न- (iv) पर्वतों के शिखरों पर पड़ती प्रातः कालीन सूर्य की किरणों के विषय में क्या कहा गया है?

उत्तर- प्रातःकाल के समय सूर्य की किरणें, जब समस्त पर्वतों के शिखरों पर पड़ती हैं तो ऐसा प्रतीत होता है, जैसे पर्वतों ने दोपहर के पुष्पों के समान लाल रंग के मुकुट अपने-अपने शीश पर धारण कर लिए हों।

प्रश्न- (v) प्रस्तुत गद्यांश में सूर्यदेव की उदारता के आधार पर किसके संदर्भ में और क्या कहा गया है?

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में सूर्यदेव की उदारता के माध्यम से सज्जन एवं उदार हृदयवाले व्यक्तियों की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना पर आधारित प्रवृत्ति (स्वभाव) के विषय में कहा गया है।

(ग) उदयाचल के शिखर रूप आँगन में बाल सूर्य को खेलते हुए धीरे-धीरे रेंगते देख पद्मिनियों को बड़ा प्रमोद हुआ। सुन्दर बालक को आँगन में जानुपाणि चलते देख स्त्रियों का प्रसन्न होना स्वाभाविक ही है। अतएव उन्होंने अपने

कमल-मुख के विकास के बहाने हँस-हँसकर उसे बड़े ही प्रेम से देखा। यह दृश्य देखकर माँ के सदृश अंतरिक्ष देवता का हृदय भर आया। वह पक्षियों के कलरव के मिस बोल उठी- आ जा आ जा आ बेटा, आ, फिर क्या था, बालसूर्य बाललीला दिखाता हुआ, झट अपने मृदुल कर (किरणें) फैलाकर, अंतरिक्ष की गोद में कूद गया। उदयाचल पर उदित होकर जरा ही देर में वह आकाश में आ गया।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित 'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन' पाठ शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी' हैं।

अथवा - पाठ का नाम 'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन'।

लेखक का नाम- 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी' ।

प्रश्न- (ii) प्रस्तुत गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- लेखक द्विवेदीजी सूर्य को सुन्दर बालक की बाल क्रीड़ा एवं आकाश को माँ के रूप में चित्रित करते हुए कहते हैं कि जब सूर्य उदित होता है तो वह शिशु के समान प्रतीत होता है। धीरे-धीरे जब वह उदयाचल के शिखर की ओर बढ़ता है तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो वह उदयाचलरूपी आँगन में क्रीड़ाएँ कर रहा हो । जिस प्रकार घर के आँगन में किसी सुन्दर शिशु को क्रीड़ाएँ करते और घुटनों के बल चलते देखकर घर की महिलाओं को हर्ष का अनुभव होता है, उसी प्रकार प्रातः कालीन बालसूर्य को उदयाचल के शिखर पर धीरे-धीरे चलते हुए देखकर कमलिनियों को परम आनन्द प्राप्त हुआ। कमलिनियाँ बालसूर्य के

अद्भुत रूप को देखकर हर्षित होने लगीं, अर्थात् सूर्य के उदित होते ही कमल और कमलिनियों ने विकसित होना आरम्भ कर दिया और इस प्रकार वे अपने आनन्द और उल्लास को व्यक्त करने लगे।

प्रश्न- (iii) सूर्योदय होने के समय कमल और कमलनियों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- सूर्योदय होने के समय कमल और कमलिनियों पर यह प्रभाव पड़ा कि वे विकसित होने लगीं।

प्रश्न- (iv) उदित होते समय सूर्य किस प्रकार दिखाई पड़ता है?

उत्तर- उदित होते समय सूर्य लाल दिखाई पड़ता है।

प्रश्न- (v) किसे देखकर कमलनियाँ आनन्दित हुई ?

उत्तर- कमलिनियाँ बाल सूर्य के अद्भुत रूप को देखकर आनन्दित हुईं।

(घ) आकाश में सूर्य के दिखायी देते ही नदियों ने विलक्षण ही रूप धारण किया। दोनों तटों या कगारों के बीच से बहते हुए जल पर सूर्य की लाल-लाल प्रातःकालीन थप जो पड़ी तो वह जल परिपक्व मदिरा के रंग सदृश हो गया। अतएव ऐसा मालूम होने लगा, जैसे सूर्य ने किरण-बाणों से अंधकाररूपी हाथियों की घटा को सर्वत्र मार गिराया हो, उन्हीं के घावों से निकला हुआ रुधिर बहकर नदियों में आ गया हो; और उसी के मिश्रण से उनका जल लाल हो गया हो।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- (i) सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन पाठ शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी' हैं।

अथवा – पाठ का नाम 'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन' ।

लेखक का नाम – 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी' ।

प्रश्न- (ii) प्रस्तुत गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- प्रस्तुत गद्यांश में प्रातः कालीन सूर्य की लाल किरणों के नदियों के जल में प्रतिबिम्बित होने के परिणामस्वरूप नदियों के लाल हुए जल की शोभा का आलंकारिक वर्णन करते हुए लेखक द्विवेदीजी कहते हैं कि उदयाचल पर उदित होने के पश्चात् सूर्य जैसे ही आकाश में थोड़ा ऊपर उठा तो उसकी लाल-लाल किरणें, नदियों के जल पर पड़ने लगीं। इसके परिणामस्वरूप नदियों ने एक अलग ही अद्भुत रूप धारण कर लिया। नदियों के दोनों तटों के मध्य बहती हुई जलधारा सूर्य की लाल-लाल किरणों के प्रभाव से मदिरा की धारा के रूप

में परिवर्तित हो गई। अर्थात् नदियों का जल परिपक्व मदिरा के रंग के समान हो गया है।

प्रश्न- (iii) प्रातः कालीन सूर्य की किरणें पड़ने पर नदियों का जल किस प्रकार प्रतीत होने लगा ?

उत्तर- प्रातःकालीन सूर्य की किरणें पड़ने पर नदियों का जल परिपक्व मदिरा के सदृश प्रतीत होने लगा ।

प्रश्न- (iv) प्रस्तुत गद्यांश में अंधकार की तुलना किससे की गई है ?

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में अंधकार की तुलना हाथियों के समूह से की गई है।

प्रश्न- (v) सूर्य की किरण-बाण ने किसे नष्ट किया ?

उत्तर- सूर्य की किरण - बाण ने अन्धकाररूपी हाथियों की घटा को नष्ट किया।

(ङ) तारों का समुदाय देखने में बहुत भला मालूम होता है, यह सच है। यह भी सच है कि भले आदमियों को न कष्ट ही देना चाहिए और न उनको उनके स्थान से च्युत् ही करना हटाना ही चाहिए। परन्तु सूर्य का उदय अंधकार का नाश करने ही के लिए होता है और तारों की श्री वृद्धि अंधकार ही की बदौलत है। इसी से लाचार होकर सूर्य को अंधकार के साथ ही तारों का भी विनाश करना पड़ा उसे उनको भी जबरदस्ती निकाल बाहर करना पड़ा। बात यह है कि शत्रु की बदौलत ही जिन लोगों को संपत्ति और प्रभुता प्राप्त होती है, उनको भी मार भगाना पड़ता है - शत्रु के साथ ही उनका भी विनाश-साधन करना ही पड़ता है। न करने से भय का कारण बना ही रहता है। राजनीति यही कहती है ।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर-सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन' पाठ - शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी' हैं।

अथवा - पाठ का नाम- 'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन' ।

लेखक का नाम- 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी' ।

प्रश्न-(ii) प्रस्तुत गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से लेखक द्विवेदीजी यह कहते हैं कि राजनीति का सिद्धान्त है कि शत्रु का सहयोगी भी उसके समान ही शत्रु होता है। यदि शत्रु को नष्ट करके उसके सहयोगियों को छोड़ दिया जाए तो वे अत्यन्त घातक होते हैं। तारों की शोभा क्योंकि अन्धकार से होती है, इसी कारण तारे उसके अनुयायी होते हैं। सूर्य को अपने प्रबल

शत्रु अन्धकार को नष्ट करने के साथ ही विवश होकर तारों को भी आकाश से समाप्त करना पड़ता है क्योंकि गेहूँ के साथ घुन को भी पिसना पड़ता है। अन्धकार बड़ा शत्रु है इसलिए सूर्य पहले उसे नष्ट करता है, किन्तु सूर्य समझता है कि तारे भी शत्रु हैं, क्योंकि वे रात्रि के सहयोगी हैं, अतः सूर्य उन्हें भी बलपूर्वक बाहर निकाल फेंकता है। यह राजनीति का कूटनीतिक सिद्धान्त है कि सर्वप्रथम बड़े शत्रु को पराजित करो, फिर उसके सहयोगी और समर्थक छोटे शत्रु को भी समाप्त कर दो।

प्रश्न- (iii) तारों का समूह देखने में कैसा प्रतीत होता है?

उत्तर-तारों का समूह सभ्य एवं सज्जन प्रतीत होता है।

प्रश्न- (iv) गद्यांश के अनुसार राजनीति क्या कहती है ?

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार राजनीति यह कहती है कि शत्रु का सहयोगी भी शत्रु के समान ही शत्रु होता है। अतः शत्रु को नष्ट करने के साथ उसके सहयोगी को भी समाप्त करना आवश्यक होता है, अन्यथा वे घातक सिद्ध हो सकते हैं।

प्रश्न- (v) सूर्योदय का प्रमुख प्रयोजन क्या होता है?

उत्तर- सूर्योदय का मुख्य प्रयोजन अन्धकार का नाश करके सम्पूर्ण संसार का कल्याण करना है।